COLLEGE NAME - SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS Edu
AT- KRINDIH, KUMAHU, SASARAM (ROHTAS)

CLASS - B. Ed (1st Y)

PAPER - C-05

UNIT - 03 (Types of curriculum)

TEACHER By - PRABHAKAR SAHU.

DATE - ~~30 MAY 2020~~
30 MAY 2020

Scanned with CamScanner

Ans: **परिचय** — शिक्षा जैसी बहुमूल्य प्रक्रिया को सही दिशा में चलाने, शिक्षा के लक्ष्य के निर्धारण, शिक्षण विधि के चयन, सहगामी क्रिया के निर्धारण, उद्देश्य एवं प्राप्त उद्देश्यों की प्राप्ति एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया को संचालित करने के लिए पाठ्यक्रम कि आवश्यकता पड़ती है।

पाठ्यक्रम समस्त शिक्षा प्रक्रिया का वह केंद्र है, जो सारी शैक्षिक प्रक्रिया को संचालित, निर्देशित, व्यवस्थित करता है। यह एक ऐसा यंत्र जिसके द्वारा शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है।

* **अर्थ/Meaning:-** पाठ्यक्रम को अंग्रेजी में CURRICULUM कहते हैं। जो लैटिन भाषा के "CURRERE" से बना है, जिसका अर्थ होता है, दौड़ का मैदान (Race Course)

अतः पाठ्यक्रम वह यंत्र है, जिसके अंर्तगत बालक अपने निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दौड़ता है अर्थात् शिक्षा के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करता है।

* **परिभाषा/Definitions :-** पाठ्यक्रम को विभिन्न शिक्षाशास्त्री द्वारा परिभाषित किया गया कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्नलिखित हैं।

⇒ **मुनरो के अनुसार :-** "पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव निहित हैं, जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लाया जाता है।"

⇒ **हेनरी जे० ओटो के अनुसार :-** "पाठ्यक्रम वह साधन है, जिसके द्वारा हम बच्चों को शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के योग्य बनाने की आशा करते है।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हैं कि पाठ्यक्रम अपने समस्त औपचारिक व अनौपचारिक ज्ञान एवं अनुभव को समाहित किये रहते हैं, जिनसे बालक का ज्ञानात्मक, भावात्मक पक्ष का चौतरफा विकास होता है।

बालक के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम का संगठन किया जाता है. जिसके पीछे अलग-अलग पाठ्यक्रम का निर्धारण विभिन्न दृष्टिकोण से करते हैं। इन विभिन्न दृष्टीकोण के आधार पर पाठ्यक्रम के ६: प्रकार होते है। जो निम्नलिखित हैं।

P.T.O

Scanned with CamScanner

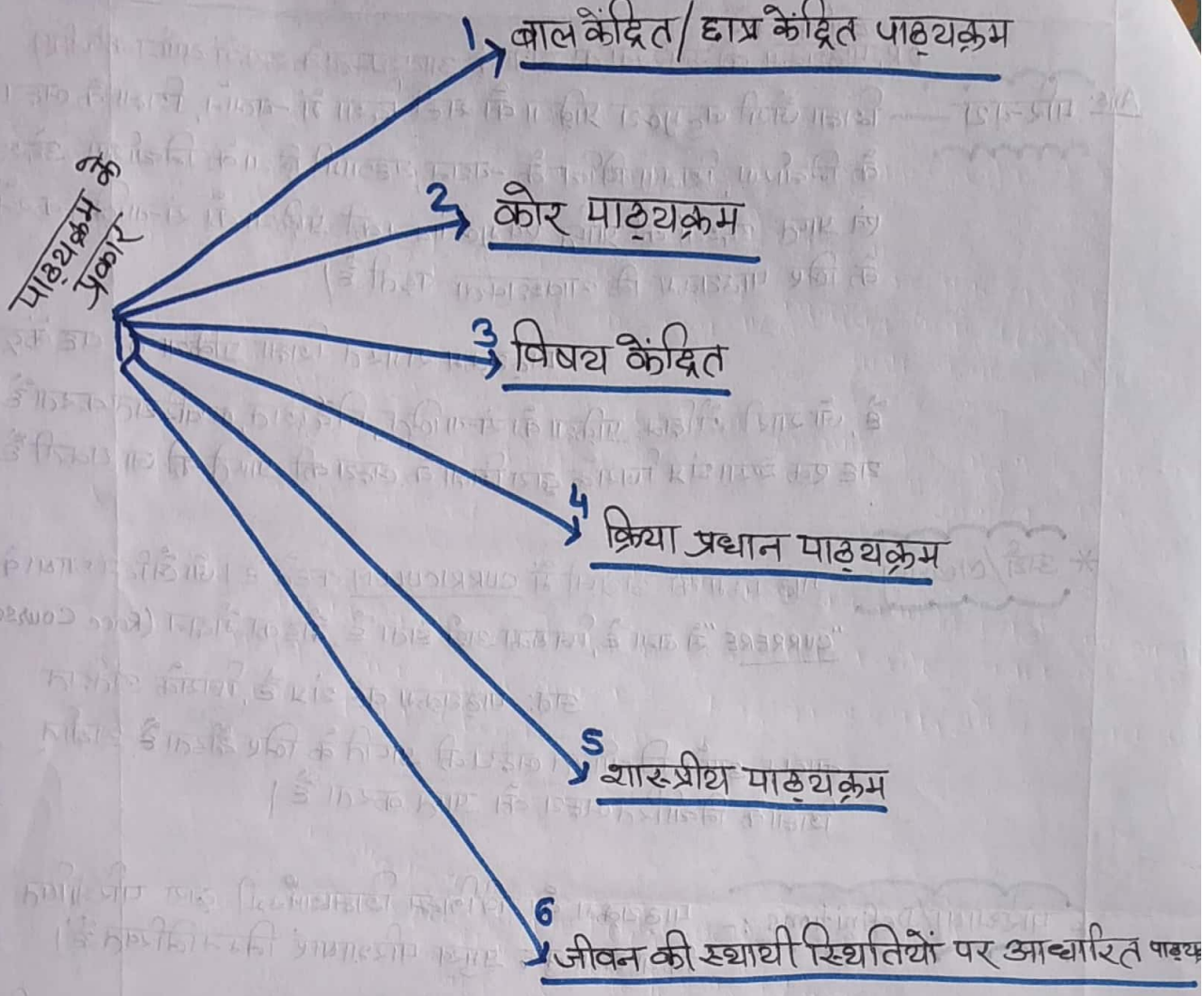

पाठ्यक्रम के प्रकार

1. बाल केंद्रित / छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम
2. कोर पाठ्यक्रम
3. विषय केंद्रित
4. क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम
5. शास्त्रीय पाठ्यक्रम
6. जीवन की स्थायी स्थितियों पर आधारित पाठ्य

1. बाल केंद्रित पाठ्यक्रम :-

बालकेंद्रित अथवा छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम से अभिप्राय उस पाठ्यक्रम से है, जिसका संगठन बालक की रुचि, रुझान आवश्यकता आदि को ध्यान में रखकर किया जाता है।

अर्थात् इस पाठ्यक्रम में विषयों की अपेक्षा बालकों को मुख्य स्थान दिया जाता है। इस पाठ्यक्रम को मनोवैज्ञानिक पाठ्यक्रम भी कह सकते हैं, क्योंकि यह बालक की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं पर आधारित होती है। इस पाठ्यक्रम में जो भी विषय रखे जाते वह सभी बालकों के विकास के स्तर उनकी रुचियों, रुझानों एवं आवश्यकता के अनुकूल होते हैं।

वर्तमान समय की सभी शिक्षण विधियों में जैसे – मॉण्टेसरी, किंडरगार्टन, डाल्टन आदि बाल केंद्रित पाठ्यक्रम पर ही जोर दिया जाता है। यह प्रयोगवादी विचारधारा पर आधारित है। इस पाठ्यक्रम में बालक के व्यक्तित्व का समुचित विकास किया जाता है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम का सूत्रपात जॉन डेवी के लेबोरेटरी स्कूल से हुआ।

* परिभाषा :-

→ जेम्स एम०ली० ने बाल केंद्रित पाठ्यक्रम को इस प्रकार परिभाषित किया है।

"बालकेंद्रित पाठ्यक्रम वह है जो पुर्णतः और समग्र रुप में सीखनेवाले में निहित है।"

("Student-centered curriculum is one which is completely and wholly rooted in learner.")

* बाल केंद्रित पाठ्यक्रम की विशेषताए (Characteristics of child-centred cur.)

1. यह पाठ्यक्रम क्रियात्मक (Functional) होती है।

2. इस पाठ्यक्रम में बालकों की आवश्यकता, अभिरुचियों, संवेगों आदी को आधार बनाया जाता है।

3. यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को उद्देश्यपुर्ण (Purposeful) अनुभव प्रदान करता है।

4. यह बालकों पर सीखने का उत्तरदायित्व डालती है।

5. यह पाठ्यक्रम प्रयोगवादी विचारधारा (Philosophy of Experimentation) पर आधारित है।

6. मनोविज्ञान इस बात पर बल देता है कि यदि बालक की रुचियों एवं आवश्यकता पर ध्यान नहीं दिया जायेगा तो उसका समुचित विकास नहीं हो सकेगा। अतः यह पाठ्यक्रम मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपुर्ण है।

7. आधुनिक शिक्षण पद्धतियो जैसे - मॉण्टेसरी, किण्डरगार्टन पद्धति आदि का आधार बाल केंद्रित पाठ्यक्रम ही है।

अतः कह सकते है कि पाठ्यक्रम में बालकेंद्रित पाठ्यक्रम शिक्षार्थी के लिए उत्तम पाठ्यक्रम है क्योंकि इस पाठ्यक्रम में बालक/शिक्षार्थी को ही केंद्र में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है।

बालकेंद्रित पाठ्यक्रम पुर्णतः बालक की रुचि, आवश्यकता, संवेगों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है वर्तमान समय में लगभग पाठ्यक्रम बालकेंद्रित ही है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

Core Curriculum

2. कोर पाठ्यक्रम (समन्वित सामान्य पाठ्यक्रम)

Introduction :- व्यापक क्षेत्रीय पाठ्यक्रम की तरह ही सामाजिक जीवन की जटीलता तथा विशिष्टीकरण की प्रवृति के परिणाम स्वरूप सभी व्यक्तियों को सामान्य जीवन के लिए अधिकाधिक विविध ज्ञान की आवश्यकता ने समन्वित सामान्य (कोर) पाठ्यक्रम को जन्म दिया। यह पाठ्यक्रम वास्तव में सामान्य पाठ्यक्रम का दुसरा नाम है। जिसके अंतर्गत उस ज्ञान एवं अनुभव को समाहित किया जाता है जो सभी छात्रों के लिए (चाहे वह किसी भी क्षेत्र में प्रवेश करना चाहते हो) सामान्य रूप से आवश्यक समझा जाता है।

यह पाठ्यक्रम मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर आधारित है। जिसके अनुसार सभी छात्रों की इच्छा, आवश्यकता एक समान नहीं होती लेकिन मूलभूत आवश्यकताए समान होती है। यही कारण है की इसमें कुछ विषय अनिवार्य एवं कुछ विषय ऐच्छिक रखे जाते है।

*** Definition :-**

⇒ According to Prof. Casewell (प्रो० केसवेल) :-

"कोर पाठ्यक्रम बच्चे के महत्वपूर्ण व्यक्तिक एवं सामाजिक समस्याओं से जुड़ा है।"

अर्थात कोर पाठ्यक्रम में ऐसे विषय वस्तु को जोड़ा जाता है जो व्यक्ति एवं समाज की समस्या का समाधान कर सके।

*** Characteristics (विशेषता) :-**

1. यह पाठ्यक्रम बालकेंद्रित एवं मनोविज्ञान पर आधारित है।
2. यह " कार्यो द्वारा समस्याओं को सुलझाने का अनुभव प्रदान करता है।
3. यह " बालकों में मानविक एवं कलात्मक गुण का विकास करता है।
4. यह " छात्रों-शिक्षकों में मधुर संबंध स्थापित करता है।
5. यह " बालकों को अपनी रुचि व क्षमता के आधार पर विषयके चयन में सहायता
6. यह " सभी छात्रों की सामान्य आवश्यकताओं की पुर्ति करने का प्रयास करता है
7. इस " में कई विषयों को एक साथ मिलाकर पढ़ाया जाता है
8. यह पाठ्यक्रम छात्रों/बालको में सामाजिकता का विकास करता है।

अतः निष्कर्षतः कह सकते है की कोर पाठ्यक्रम में सामूहिक विषय वस्तु जीवन के कार्यो, समस्याओं तथा आवश्यकताओं से संबंधित विषयों में सुसम्बद्धता पर आधारित होता है साथ ही इसके कार्यक्रमों को जीवन की समस्याओं तथा छात्रों की अभिरुचियों से संबंध करने का प्रयास किया जाता है।

Scanned with CamScanner

3. विषय केंद्रित पाठ्यक्रम :-

विषय केंद्रित पाठ्यक्रम में विषय को आधार मानकर पाठ्यक्रम को संगठित और नियोजित किया है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न विषयों के ज्ञान को अलग-अलग रूप में प्रदान करना होता है। इस पाठ्यक्रम में सभी विषयों के ज्ञान को अलग निश्चित कर लिया जाता है, तथा उसी के अनुसार पुस्तके तैयार की जाती है। इन्हीं पुस्तकों से बालक विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते है। इस पाठ्यक्रम में पुस्तकों पर अधिक बल दिये जाने के कारण इसे "पुस्तक केंद्रित" पाठ्यक्रम भी कहा जाता है। इस पाठ्यक्रम में छात्रों के लिए क्या महत्वपूर्ण है और वे क्या सीखना चाहते है कि यह ~~सब~~ विषयवस्तु पर उनका अधिकार प्राप्त करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया जाता है।

इस पाठ्यक्रम में विषय वस्तु पहले से निश्चित होने के कारण शिक्षण एवं छात्र दोनों को पता होता है कि उन्हें क्या करना है, कितना पढ़ना है, और पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों से विद्यार्थियों कि परीक्षा ली जाती है।

* **विशेषताए :-**

1. इस पाठ्यक्रम में पाठ्यक्रम आयोजन शिक्षण और मूल्यांकन की सुविधा होती है। ~~जबकि विषय~~
2. यह पाठ्यक्रम परम्परागत ज्ञान को आगे बढ़ाने का अच्छा साधन है।
3. इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्ति के साथ साथ उसे सुदृढ़ करने की सुविधा रहती है।
4. इस पाठ्यक्रम में यह पहले से तय कर लिया जाता है कि क्या पढ़ना है और क्या बढ़ाना है।
5. इस पाठ्यक्रम मे नये ज्ञान की खोज एवं तथ्यों को उपयोगी क्रम मे व्यवस्थित करने की सुविधा होती है।

4. क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम :-

क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम वह पाठ्यक्रम है जिसमें विभिन्न प्रकार की क्रियाओं और विभिन्न गतिविधियों में बालकों की रूचि और क्षमता को ~~केवल~~ आधार बनाकर अध्यापक विभिन्न विषय, वर्गों के विद्यार्थियों के लिए क्रियाओं का चुनाव करते है। इस पाठ्यक्रम को जॉन डेवी ने अपने विद्यालय में लागू किया। इस पाठ्यक्रम में बालकों कि आवश्यकता एवं क्षमता को ध्यान रखा जाता है। यह पाठ्यक्रम बालक के चौतरफा विकास में अपनी मुख्य भूमिका निभाता है।

इस पाठ्यक्रम का समर्थन महान शिक्षाशास्त्री किलपैट्रिक ने भी किया है। इस पाठ्यक्रम से बालक में यह क्षमता विकसित हो जाती है की वह स्वयं करके सीखता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

* विशेषताए :-

1. यह पाठ्यक्रम में चुने गये विषय ऐसे होते है जो समाज और विद्यार्थियों के उपयोग में आ सके।
2. इस पाठ्यक्रम के आधार पर पढ़ाया गया विषय में बालक खूब रूचि लेता है
3. यह पाठ्यक्रम बालक के सर्वांगिण विकास में सहायक होता है।
4. यह पाठ्यक्रम बालक को Learning by doing (करके सीखना) के लिए प्रेरित करता है।
5. इस प्रकार के पाठ्यक्रम को बनाते समय बालक की रूचि व आवश्यकता को विशेष ध्यान दिया जाता है।

5. शास्त्रीय पाठ्यक्रम :- शास्त्रीय केंद्रित पाठ्यक्रम के द्वारा नैतिक और अध्यात्मिक विकास पर विशेष बल दिया जाता है। यह पाठ्यक्रम यूनान में प्रारंभ हुआ भारत में इसका प्रारंभ हुआ है। इस पाठ्यक्रम में शास्त्रीय भाव जैसे - ज्योतिष शास्त्र, गणित पर विशेष बल दिया गया।
यह पाठ्यक्रम शिक्षा के प्रति परम्परागत दृष्टिकोण रखता है।

6. जीवन की स्थायी स्थितियों पर आधारित पाठ्यक्रम :-
इस पाठ्यक्रम में शिक्षा बालकों के जीवन को केंद्र मानकर दी जाती है। यह शिक्षा जीवन की है, जीवन के लिए है एवं जीवन के लिए दी जाती है। इसमें बालकों की रूचि, क्षमता, प्रवृत्ति का ध्यान रखा जाता है।

दूसरे शब्दों में कहें तो - यह पाठ्यक्रम बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नता पर आधारित है। आधुनिक शिक्षा जीवन केंद्रित पाठ्यक्रम की मांग करती है।

निष्कर्ष :- ~~शिक्षा का कार्य~~ उपरोक्त विवेचनाओं के आधार पर निष्कर्षतः कह सकते है की शिक्षा का कार्य संपूर्ण मानव जाति को अंधकार से प्रकाश की ओर लाना है. वही पाठ्यक्रम एक मुख्य साधन है जो शिक्षा के उद्देश्य की ~~प्राप्ति~~ पुर्ति करता है। बालक के सर्वांगिण विकास को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है. जिसके कई प्रकार होते उन प्रकारो में विभिन्न दृष्टीकोण, एवं उद्देश्य को आधार बनाकर विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों का निर्माण किया जाता है। जो शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में बालक व शिक्षकों की सहायता करता है

Scanned with CamScanner